आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-128/2015-2017
प्रेषण :- कार्यालय शास्त्री सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांकः-प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

दैनिक

● मुद्रण तारीख - 09-05-2016 ● अंक- 519 ● तारीख - 10 मई 2016, वैशाख शुक्ल - 4 ● मंगलवार ● उदयपुर ● कुल पृष्ठ-02 ● मूल्य-1 रूपया ● पृष्ठ-01

श्री सत्यसांई -अनमोल वचन

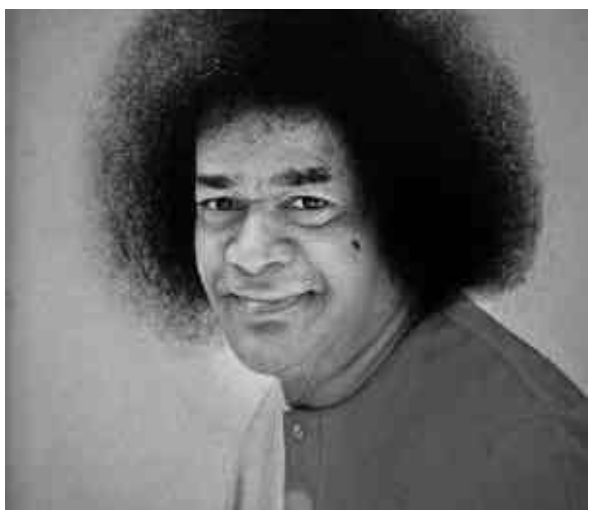

सत्यता

अपने और मेरे मध्य कोई दूरी मत रखो। मौलिक रूप में मैं तुम हूं, तुम मैं हो। तुम तरंगें हो, मैं सागर हूं। यदि तुम अन्तः संतोष प्राप्त कर लेते हो तो मैं ही संतोष हूं क्योंकि मैं तुम ही हूं। यही सत्यता है। **—श्री सत्य सांई बाबा**

महात्मा बुद्ध के प्रेरणात्मक कथन

1. अज्ञानी आदमी एक बैल है। ज्ञान में नहीं, वह आकार में बढ़ता है।
2. तीन चीजें ज्यादा देर तक नहीं छुप सकती, सूरज, चंद्रमा और सत्य।
3. शांति मन के अन्दर से आती है, इसके बिना इसकी तलाश मत करो।
4. आप अपने पथ की यात्रा नहीं कर सकते, जब तक आप खुद अपना पथ नहीं बनाते ।
5. तुम अपने क्रोध के लिए दंड नहीं पाओगे, तुम अपने क्रोध द्वारा दंड पाओगे।

बावरा जी के दोहे

सेवा, प्रेम, स्नेह, करूणा के बीज उगाते जाओ।
दया भाव के बादल बरसे, मानवता फल पाओ।।
सभी सगे है, सब अपने है, सब ईश्वर के अंश।
कोई पराया, नहीं यहाँ पर, मानवता का वंश।।
दया दान करवाती रहती, त्याग मधुर फल देता।।
स्नेह बनाता रिश्ते नाते, प्रेम स्वर्ग निर्माता।।
सेवा की मन्जिल है आनन्द, परमानन्द तक जाती।।
सहज, सरल, निर्मल मानव की, यह दुनियाँ यश गाती।।

पर्यटकों के लिए मोबाइल ऐप लॉच करेगी जम्मू कश्मीर सरकार

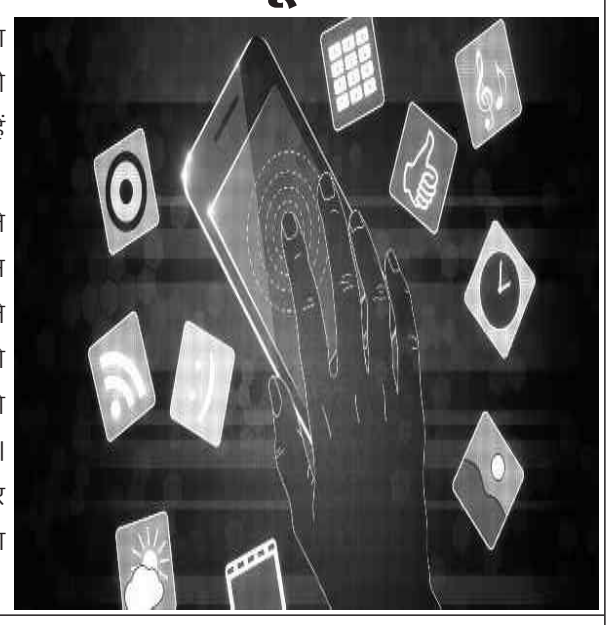

जम्मू कश्मीर के पर्यटकों के लिए खुशखबरी है। उनको सुविधा देने हेतु जम्मू कश्मीर सरकार मोबाइल ऐप की तैयारी कर रही है। इससे पर्यटकों को वो तमाम जानकारी मिलेगी जो उन्हें चाहिए।

पर्यटन मंत्री प्रिया सेठी ने इस बात की जानकारी दी है। उन्होंने बताया कि जब पर्यटक लखनपुर में प्रवेश करता है तो उसे इस बात की जानकारी नहीं होती है कि उसे कहा जाना है। मैने विभाग को ऐसा ऐप तैयार करने को कहा है जो पर्यटकों को गाइड करेगा। उन्होंने उम्मीद जताई कि इससे पर्यटकों को सुविधा मिलेगी और जम्मू कश्मीर के पर्यटन में विकास होगा। उन्होंने कहा कि जो जम्मू कश्मीर आते हैं उन्हें रंजीत सागर डेम की जानकारी नहीं होती है, बलिदान स्तम्भ कहां है, पता नहीं होता है, ऐसे में यह ऐप उन्हें पूरी जानकारी देगा।

द्धैत वेदान्त के रचयिता-रामानुजाचार्य (जयन्ती विशेष)

वैष्णव आचार्यों में प्रमुख रामानुजाचार्य की शिष्य परम्परा में ही रामानंद हुए थे जिनके शिष्य कबीर और सूरदास थे। रामानुज ने वेदांत दर्शन पर आधारित अपना नया दर्शन विशिष्ट द्वैत वेदान्त गढ़ा था।

रामानुजाचार्य ने वेदांत के अलावा सातवीं–दसवीं शताब्दी के रहस्यवादी एवं भक्तिमार्गी अलवार सन्तों से भक्ति के दर्शन को तथा दक्षिण के पंचरात्र परम्परा को अपने विचार का आधार बनाया।

1017 ई. में रामानुज का जन्म दक्षिण भारत के तिरुकुदूर क्षेत्र में हुआ था। बचपन में उन्होंने कांची में यादव प्रकाश गुरु से वेदों की शिक्षा ली। रामानुजाचार्य आलवन्दार यामुनाचार्य के प्रधान शिष्य थे। गुरु की इच्छानुसार रामानुज ने उनसे तीन काम करने का संकल्प लिया था– ब्रह्मसूत्र, विष्णु सहस्त्रनाम और दिव्य प्रबंधनम की टीका लिखना। उन्होंने गृहस्थ आश्रम त्यागकर श्रीरंगम के यदिराज संन्यासी से संन्यास की दीक्षा ली।

मैसूर के श्रीरंगम से चलकर रामानुज शालग्राम नामक स्थान पर रहने लगे। रामानुज ने उस क्षेत्र में बारह वर्ष तक वैष्णव धर्म का प्रचार किया। फिर उन्होंने वैष्णव धर्म के प्रचार के लिए पूरे देश का भ्रमण किया। 1137 ई. में वे ब्रह्मलीन हो गए।

मूल ग्रन्थ : ब्रह्मसूत्र पर भाष्य 'श्रीभाष्य' एवं 'वेदार्थ संग्रह'।

विशिष्टाद्वैत दर्शन : रामनुजाचार्य के दर्शन में सत्ता या परमसत् के सम्बन्ध में तीन स्तर माने गए हैंः– ब्रह्म अर्थात् ईश्वर, चित् अर्थात आत्म, तथा अचित अर्थात प्रकृति।

वस्तुतः ये चित् अर्थात् आत्म तत्त्व तथा अचित् अर्थात् प्रकृति तत्त्व ब्रह्म या ईश्वर से पृथक नहीं है बल्कि ये विशिष्ट रूप से ब्रह्म का ही स्वरूप है एवं ब्रह्म या ईश्वर पर ही आधारित हैं यही रामनुजाचार्य का विशिष्टाद्वैत का सिद्धान्त है।

जैसे शरीर एवं आत्मा पृथक नहीं हैं तथा आत्म के उद्देश्य की पूर्ति के लिए शरीर कार्य करता है उसी प्रकार ब्रह्म या ईश्वर से पृथक चित् एवं अचित् तत्त्व का कोई अस्तित्व नहीं हैं वे ब्रह्म या ईश्वर का शरीर हैं तथा ब्रह्म या ईश्वर उनकी आत्मा सदृश्य हैं।

भक्ति से तात्पर्यः– रामानुज के अनुसार भक्ति का अर्थ पूजा–पाठ या कीर्तन–भजन नहीं बल्कि ध्यान करना या ईश्वर की प्रार्थना करना है। सामाजिक परिप्रेक्ष्य से रामानुजाचार्य ने भक्ति को जाति एवं वर्ग से पृथक तथा सभी के लिए संभव माना है।

आइये ! जानें साई अवतार

1. भगवान बाबा की देह लकवे से कब पीड़ित हुई ?
29 जून 1963 को
2. साई बाबा के कितने अवतार कलियुग में माने जाते हैं ?
शिरडी साई, सत्य साई, प्रेम साई
3.शिरडी साई बाबा किसके अवतार माने जाते हैं ?
भगवान शिव के
4.सत्य साई बाबा ने शिरडी साई बाबा के बारे में जानकारी कब दी थी ?
28 सितम्बर 1990 को
5.सत्य साई के अनुसार शिरडी साई का जन्म कब हुआ ?
28 सितम्बर 1838
6.शिरडी साई बाबा का जन्म कहाँ हुआ था ?
हैदराबाद रियासत के पत्री गांव में
7.शिरडी साई बाबा के माता–पिता का नाम बताइये।
माता देवगिरी अम्मा, पिता गंगाभव
8.सन् 1857 से साई बाबा कब तक शिरडी रहे ?
1918 समाधि लेने तक
9.शिरडी साई ने अपने पुनः अवतरण की बात किसे बताई थी ?
अब्दुल्ला और काका साहिब दीक्षित को
10.शिरडी साई ने कितने वर्ष बाद पुर्नजन्म लेने की बात कही थी ?
8 वर्ष बाद

मानव मन के बोल

संस्थान के सेवा–शिविर भोपाल व जम्मू काश्मीर

गतांक से आगे.....

हमारे ऐसे बच्चे जो चल नहीं पाते उनके लिये महाराज! वैश्य महासम्मेलन, वैश्य महा सम्मेलन जिसके परम आदरणीय भास्कर के चेयरमैन रमेश चन्द्र जी अग्रवाल साहब जो अभी चार घण्टे बाद इन्दौर पधार के मिलने वाले है, ऐसे हमारे रामदास जी अग्रवाल साहब, हमारे आदरणीय सत्यभूषण जी, और हमारे यहां के अरविंद जी बागडी साहब, प्रिय हमारे दिनेश जी मित्तल, माता जी पूज्य पिता जी बाबू लाल जी मित्तल की पावन भूमि पर जो आत्मकथा लिखा रहा हूँ शुभ लक्षण, शुभ स्वाती नक्षत्र, इधर 24 मई को इन्दौर में विकलांगों का शिविर, उधर भारत सरकार के गृहमंत्रालय के केन्द्रीय राज्यपाल सशस्त्र सेना उनके द्वारा एक शिविर कराया जा रहा है। जम्मू के मनिहाल में कटर सेवा के आस–पास। वहां प्रिय प्रशांत जी और वन्दना जी गये है। इधर मेरे साथ सोहनजी, कुलदीप जी, महिम जी, छोगाराम जी, महेन्द्र भैय्या, सुनील, सब पधारे है मुकेश जी शर्मा जो इस केम्प के प्रभारी है, देखिये, कहते हे युग– युग के घावो को धोना, वर्षों से पीड़ित है विकलांग कोई जन्म से माता ने सोचा मेरे भाग्य जग गया मेरे पुत्र आ गया पुत्री आ गई। पिता ने सोचा मेरे कुल का गौरव आ गया और जब वो लडका खड़ा हुआ तो गिर पड़ा, वापस खड़ा हुआ वापस गिर पड़ा। पैर में चोट आ गई। मां के चेहरे पर उदासी छा गई मेरे बेटे के पैर में ताकत नहीं। मेरे बेटे के पैर में ये झनझनाहट क्यों? और फिर वह पूरे भारत में जहां–जहां इसका ईलाज होता है वहां जाकर के हॉस्पीटल के दरवाजे खटखटाती है। फिर सीपी सेरेब्रल पाल्सी के बच्चे को, मैं तो बहुत खुश हूँ जो पूरे विश्व के 17 देश और भारत के हर राज्य से उदयपुर कृपा करके पधार रहे हैं। ये नारायण है इनको पहचान लो, ये नर रूपी नारायण है। इसलिए हम कहते है।

क्रमश अगले अंक में ...

पर्यावरण संरक्षण और हमारी संस्कृति

भारतीय संस्कृति में पर्यावरण के संरक्षण को बहुत महत्व दिया गया है। यहां मानव जीवन को हमेशा मूर्त या अमूर्त रूप में पृथ्वी, जल, वायु, आकाश, सूर्य, चन्द, नदी, वृक्ष एवं पशु–पक्षी आदि के साहचर्य में ही देखा गया है। पर्यावरण शब्द का अर्थ है हमारे चारों ओर का आवरण। पर्यावरण संरक्षण का तात्पर्य है कि हम अपने चारों ओर के आवरण को संरक्षित करें तथा उसे अनुकूल बनाएं। पर्यावरण और प्राणी एक–दूसरे पर आश्रित हैं। यही कारण है कि भारतीय चिंतन में पर्यावरण संरक्षण की अवधारणा उतनी ही प्राचीन है, जितना यहाँ मानव जाति का ज्ञात इतिहास है। भारतीय संस्कृति का अवलोकन करने से ज्ञात होता है कि यहां पर्यावरण संरक्षण का भाव अति पुराकाल में भी मौजूद था, पर उसका स्वरूप भिन्न था। उस काल में कोई राष्ट्रीय वन नीति या पर्यावरण पर काम करने वाली संस्थाएं नहीं थीं। पर्यावरण का संरक्षण हमारे नियमित क्रिया–कलापों से ही जुड़ा हुआ था। इसी वजह से वेदों से लेकर कालिदास, दाण्डी, पंत, प्रसाद आदि तक सभी के काव्य में इसका व्यापक वर्णन किया गया है।

भारतीय दर्शन यह मानता है कि इस देह की रचना पर्यावरण के महत्वपूर्ण घटकों– पृथ्वी, जल, तेज, वायु और आकाश से ही हुई है। समुद्र मंथन से वृक्ष जाति के प्रतिनिधि के रूप में कल्पवृक्ष का निकलना, देवताओं द्वारा उसे अपने संरक्षण में लेना, इसी तरह कामधेनु और ऐरावत हाथी का संरक्षण इसके उदाहरण हैं। श्रीकृष्ण की गोवर्धन पर्वत की पूजा की शुरुआत का लौकिक पक्ष यही है कि जन सामान्य मिट्टी, पर्वत, वृक्ष एवं वनस्पति का आदर करना सीखें। श्रीकृष्ण ने स्वयं को ऋतुस्वरूप, वृक्ष स्वरूप, नदी स्वरूप एवं पर्वत स्वरूप कहकर इनके महत्व को रेखांकित किया है। भारतीय विचारधारा में जीवन का विभाजन भी प्रकृति पर ही आधारित था। चार आश्रमों में से तीन तो पूरी तरह से प्रकृति के साथ ही व्यतीत होते थे। ब्रह्मचर्य आश्रम, जो गुरु–गृह में व्यतीत होता था और गुरुकुल सदैव वन–प्रदेश, नदी तट पर ही हुआ करते थे, जहां व्यक्ति सदैव प्रकृति से जुड़ा रहता था। वानप्रस्थ आश्रम में भी व्यक्ति वन प्रदेशों में रहकर आत्मचिंतन तथा जन कल्याण के कार्य करता था। संन्यास आश्रम में तो समग्र उत्तरदायित्वों को भावी पीढ़ी को सौंपकर निर्जन वन एवं गिरि कंदराओं में रह कर ही आत्मकल्याण करने का विधान था। जिस प्रकार राष्ट्रीय वन–नीति के अनुसार संतुलन बनाए रखने हेतु पृथ्वी का 33 प्रतिशत भूभाग वनाच्छादित होना चाहिए, ठीक इसी प्रकार प्राचीन काल में जीवन का एक तिहाई भाग प्राकृतिक संरक्षण के लिए समर्पित था, जिससे कि मानव प्रकृति को भली–भांति समझकर उसका समुचित उपयोग कर सके और प्रकृति का संतुलन बना रहे।

उपनिषदों में लिखा है– हे अश्वरूप धारी परमात्मा! बालू तुम्हारे उदरस्थ अर्धजीर्ण भोजन है, नदियां तुम्हारी नाड़ियां हैं, पर्वत–पहाड़ तुम्हारे हृदयखंड हैं, समग्र वनस्पतियां, वृक्ष एवं औषधियां तुम्हारे रोम सदृश हैं। ये सभी हमारे लिए शिव बनें। हम नदी, वृक्षादि को तुम्हारे अंग स्वरूप समझकर इनका सम्मान और संरक्षण करते हैं। भारतीय परम्परा में धार्मिक कृत्यों में वृक्ष पूजा का महत्व है। पीपल को पूज्य मानकर उसे अटल सुहाग से सम्बद्ध किया गया है, भोजन में तुलसी का भोग पवित्र माना गया है, जो कई रोगों की रामबाण औषधि है। विल्व वृक्ष को भगवान शंकर से जोड़ा गया और ढाक, पलाश, दूर्वा एवं कुश जैसी वनस्पतियों को नवग्रह पूजा आदि धार्मिक कृत्यों से जोड़ा गया। पूजा के कलश में सप्तनदियों का जल एवं सप्तभृत्तिका का पूजन करना व्यक्ति में नदी व भूमि को पवित्र बनाए रखने की भावना का संचार करता था। सिंधु सभ्यता की मोहरों पर पशुओं एवं वृक्षों का अंकन, सम्राटों द्वारा अपने राजचिन्ह के रूप में वृक्षों एवं पशुओं को स्थान देना, गुप्त सम्राटों द्वारा बाज को पूज्य मानना, मार्गों में वृक्ष लगवाना, कुएं खुदवाना, दूसरे प्रदेशों से वृक्ष मंगवाना आदि तात्कालिक प्रयास पर्यावरण प्रेम को ही प्रदर्शित करते हैं।

वैदिक ऋषि प्रार्थना करते है– पृथ्वी, जल, औषधि एवं वनस्पतियां हमारे लिए शांतिप्रद हों। ये शांतिप्रद तभी हो सकते हैं जब हम इनका सभी स्तरों पर संरक्षण करें। तभी भारतीय संस्कृति में पर्यावरण संरक्षण की इस विराट अवधारणा की सार्थकता है, जिसकी प्रासंगिकता आज इतनी बढ़ गई है।

मजाक बनाकर नही मजे से जीयो,

जीवन वोध में जीना सीखो विरोध में नहीं, एक सुखप्रद जीवन के लिए इससे श्रेष्ठ कोई दूसरा उपाय नहीं हो सकता। जीवन अनिश्चित है और जीवन की अनिश्चितता का मतलब यह है कि यहाँ कहीं भी और कभी भी कुछ हो सकता है।

यहाँ पर आया प्रत्येक जीव बस कुछ दिनों का मेंहमान से ज्यादा कुछ नहीं है, इसीलिए जीवन को हंसी में जीयो, हिंसा में नहीं। चार दिन के इस जीवन को प्यार से जीयो, अत्याचार से नहीं।

जीवन जरुर आनंद के लिए ही है इसीलिए इसे मजाक बनाकर नहीं मजे से जीयो। इस दुनियां में बाँटकर जीना सीखो बंटकर नहीं। जीवन वीणा की तरह है, ढंग से बजाना आ जाए तो आनंद ही आनंद है।

सम्पादकीय

एक महात्मा जी थे, बड़े भले–बड़े अच्छे। नाम के ही साधु नहीं, हृदय से भी भक्त थे। आमतौर पर उनके श्री मुख से निकलता था –"जगदीश जगत का भला ही करता हैं।" एक दिन एक मैय्या दुःखी अवस्था में तो आयी ही– उन्हें महात्मा जी पर गुस्सा भी था। शोक पूर्ण अवस्था में वह बोली–"महाराज आपकी सब बातें तो मैं मान सकती हूँ–पर बताइए, मेरी बहिन के इकलौते तीस वर्षीय बच्चे को भगवान ने उठा लिया, क्या भला किया है – इसमें ? महाराज श्री विचार मग्न हुए, बोले," माँई, मैं तुम्हारी बहिन का दुःख समझता हूँ। ज्ञान से यों समझो कि किसी बड़े सेठ की पच्चीस शहरों में दुकानें हैं– ब्रांचें हैं। अब सेठ का आदेश उदयपुर की ब्रांच में आया कि 100 थान कपड़े के जोधपुर ब्रांच में भेज दो– उदयपुर का ब्रांच मैनेजर यदि स्वामी भक्त हुआ तो क्या करेगा वह ? तुरन्त रवाना ही करके उत्तर देगा न, कि जी, साहब भेज दिए। और दूसरी तरफ, यदि मैनेजर ने सोचा कि सेठ जी तो कुछ समझते ही नहीं, यह कपड़ा तो मेरे अत्यन्त प्रिय है– इसे न भेजू! बोलो, माई–पहले वाला मैनेजर अच्छा या दूसरा ? दोनों में से किससे ज्यादा सेठ राजी रहेगा।

महात्माजी ने आगे व्याख्या की "ठीक इसी तरह हम सभी भगवान के ब्रांच मैनेजर ही तो है न" ? तो आपकी बहिन को परमात्मा ने बेटा सौंपा, अब दूसरी जगह उसकी जरूरत पड़ गई – सो भगवान ने ट्रांसफर कर दिया।

ज्ञानी काटे ज्ञान से, मूरख काटे रोय।

इतने दयालु हैं परमात्मा कि हमें सर्व श्रेष्ठ मनुष्य योनि दी, प्रतिभा, बुद्धि एवं अवसर सभी दिये। सन्तवाणी का श्रवण भी करने को मौका दिया। अच्छी लगती है न ये पंक्तियाँ –

"मुख में हो रामनाम, राम सेवा हाथ में।
तू अकेला नहीं प्यारे, राम तेरे साथ में"।।

यह मनड़ा कहीं न कहीं तो लगेगा ही ? तो क्यों न इसे प्रभु स्मरण में लगावें एवं अपने को मालिक न समझकर मैनेजर समझें, और यथा साध्य "परहितरत् रहते हुए भगवद् सेवा के भाव से" सभी कार्य करते रहें–दुःखी–गरीब, भाई–बहिनों के साथ विशेष प्रेम और सरलता का बर्ताव करें। "मानव सेवा ही माधव सेवा है" – सावधानी ही साधना है, नर ही नारायण है– इसका रखें सतत ध्यान।

''शिव के ईष्ट राम, और राम के ईष्ट शिव''

उज्जैन। आगर रोड सेक्टर 5 मंगलनाथ क्षैत्र में सिंहस्थ महाकुंभ में आयोजित नारायण सेवा संस्थान कुम्भ खालसा के तत्वाधान में आयोजित 'श्रीमद् भागवत कथा' मे संस्थान अध्यक्ष डॉ. श्री प्रशान्त जी अग्रवाल ने बताया कि पावन कथा का रसास्वादन प्रदान करते हुए, प्राची देवी जी ने कहाँ कि शिव को प्रसन्न करना हैं तो राम जी का भजन करो और रामजी को प्रसन्न करना हैं तो शिव जी को प्रसन्न करों क्योकि दोनो ही एक दूसरे के ईष्ट हैं।

साथ ही भागवत कथा कि महिमा का गान करते हुए कहाँ कि भगवान के विराट स्वरूप में ही ये समस्त विश्व विराजीत है। उसी विराट स्वरूप का दर्शन श्रीकृष्ण भगवान ने अर्जुन को महाभारत के युद्ध के प्रारम्भ में दर्शन कराया। गीता जी कि महिमा सुनाते हुए देवी जी ने भगवद् गीता में किस प्रकार श्रीकृष्ण परमात्मे ने अर्जुन को युद्ध करके अपने कर्म का धर्म निभाने का आदेश दिया। पू. देवीजी ने भगवान के चौबीस अवतारों कि कथा का महत्व समझाते हुए कहाँ कि भगवान के अवतार गिने नहीं जा सकते। नारायण ने अनेको लीला करते हुए भक्तों कि रक्षा की। उन सभी लीलाओं के माध्यम से परमात्मा का एक–एक स्वरूप उभर कर आया हैं। पर सभी रूप कि गिनती नहीं हो पाई। अतएव भगवान विराट पुरूष ने अनेको अवतार ले कर भक्तों कि कामना मनोकामना, और संकल्पों को पूर्ण किया। देवीजी ने भगवान के चौबीस अवतार में से भगवान के पहले अवतार का वर्णन करते हुए कहा कि भगवान ने चार सनकादिक ऋषियों का अवतार ले कर संसार को ब्रह्मचर्य का उपदेश दिया। देवीजी ने ये भी कहा कि अखण्ड ब्रह्मचर्य का ज्ञान पाना होतों रामायण जी के लक्ष्मणलाला के अद्भुत चरित्र का दर्शन और वर्णन देख लेना चाहिए। अर्थात भक्तों के उद्धार और कल्याण के लिए अनेका अनेक अवतार हुआ करते हैं।

संस्थान के संस्थापक आचार्य महामण्डलेश्वर 1008 पद्मश्री अलंकृत साधु कैलाश जी मानव ने बताया आज पंचम दिवस कि कथा का श्रवणपान कराते हुए पू. रामकृष्ण शास्त्री जी महाराज ने भगवान के बालस्वरूप का सुन्दर निरूपण करते हुए गोकुल में किस प्रकार उत्सव मनाया गया लाला प्रागट्य के अवसर पर इस कथा को सुनाते हुए भक्तों को आनन्द विभौर कर दिया।

पुतना,तृणाव्रत उद्धार शंकर भजन, माखन चौरी, गौचारण और गिरीराज धारण (गोवर्धन धारण) जैसी श्रीकृष्ण परमात्मा कि लीलाओं का सुन्दर विस्तार पूर्वक श्रवणपान कराया। किस प्रकार श्रीकृष्ण परमात्मा गोकुल वासीयों के प्राण बन कर नन्दगांव में बसने लगे और हर समय ब्रजवासीयों का रक्षण करते रहे ये कथा का वर्णन करते हुए कहा–जब जीव परमात्मा को सर्वस्व सर्मपित करते हैं तब परमात्मा हर क्षण भक्त के साथ रहते हैं। और भक्तों के वशीभूत रहते हैं जब भक्त अपने अनन्त अवगुणों को त्याग कर संसार कि भौतिकता का त्याग करता हैं तब प्रभू का दर्शन प्राप्त होता हैं।

ब्रजवासीयों ने अपने जीवन को कृष्णमय बना दिया, श्रीकृष्ण के आधिन बना दिया और प्रभू के अनन्त भावों से सेवा करते हुए अपने जीवन को हरि चरणारविन्द में सर्मपित कर दिया तब श्रीहरि ने उन सभी ब्रजवासीयों को अपनी अद्भुत लीलाओं का दर्शन कराया।

व्यवहार है जीवन का राजमार्ग

(मानव धर्म शृंखला का चतुर्थ (4) पुष्प)

गतांक से आगे

ऊँ वर्णानामर्थसंघानां, रसानां छन्दसामपि।
मंगलानां च कर्त्तारौ वन्दे वाणी विनायकौ।।
भवानीशंकरौ वन्दे श्रद्धाविश्वासरूपिणौ।
याभ्यां विना न पश्यन्ति सिद्धाः स्वान्तः
स्थमीश्वरम्।।(3)

वृन्दावन रा राजा, आजा यशोदा रा लाल।
प्यारी गायां रा गोपाल,
राधा राणी का सरकार।
विनती भगत कर रे नन्दलाल जी।
जगत पती जगदीश्वर थारी महीमा
अपरम्पार रे।
गाऊ राग केदार रे – गाऊ राग केदार रे।
सत चित आनन्द कन्द मुरारी ।
सत चित आनन्द कन्द मुरारी।
गाथा थारी गाऊ।
भगता ने गाए सुनाऊ।
वृन्दावन रा राजा, आजा ....
करी करूणा नरसी कर जोड़े।
भीड़ पड़ी अति भारी जी।
घर की विगत सकल तुम जाणो।
ना कोई देत उधारी जी।
आज अणी विपदा रे कारण – आज अणी
विपदा रे कारण।
राग धरू केदारा।
थे जाणो नाथ हमारा।
वृन्दावन रा राजा, आजा ....(4)

गुरूजी– श्री गणेश भगवान की पावन कृपा से अद्भुत संयोग, अद्भुत क्षण आ गया–महाराज। लोक व्यवहार, लोक चरित्र जनता जनार्दन द्वारा कैसे जीया जावे? कैसे एक एक सांस की पवित्रता का अनुभव करते हुए , मन को प्रफुल्लित करते हुए रोम–रोम से तरंगो का अनुभव किया जावे? उसकी पावन कथा। हम हाथ ऊँचा करके अपने आप को धन्य धन्य मानते हुए नृसिंह भगवान की जय जयकार करेंगे। बोलिए श्री नृसिंह भगवान की जय, भक्तराज प्रहलाद् की जय, मार्कण्डेय महाऋषि की जय।

आप सभी भाइयों, प्रिय साधक महानुभावों, हमारे सरस्वती के पुत्र–पुत्री, आदरणीय गुप्ता जी, संतोष जी, नृसिंह भैय्या, महिम भैय्या, लक्ष्मी लाल जी आप सब सेवा का जीवन जी रहे हैं, आपश्री ने अपने कानों से श्रवण करने का सौभाग्य प्राप्त किया है।

श्री नृसिंह भगवान ने जो मानवधर्म की कथा, लोकव्यवहार की अपनी मुट्ठी में कर्म को एकत्रित करके कर्मयोगी की तरह, स्थित प्रज्ञ की तरह, ध्यान योगी की तरह जीवन में आनंद करते हुए सत्, रज और तम को महसूस करते हुए ये परमानंद की कथा। भक्तराज प्रहलाद् से कही, प्रभु हम धन्य हो गये। आपश्री ने बड़ी कृपा करके ये क्षमा की कथा, ये विद्या की कथा, ये वाणी के मीठेपन की, कानों के अमृतवचनों की, ये सांसों की कथा, ये कर्मयोग की कथा आपने कृपा करके कही। बार – बार प्रहलाद् भगवान नृसिंह जी के चरणों में वंदन करते हैं , नमन करते हैं और मनुज जी, वो मनुज जी जिनके पुत्र का अपहरण होने के बावजूद जिन्होंने पिंडवाड़ा में रोगियों की सेवा की। किसी को रक्तदान किया, किसी को दवाई की व्यवस्था की और वही मनुज जी महाराज कुलदागी के इतने अधर्म को सहन करते, प्रहारो को सहन करते हुए भी, निरन्तर कर्म योग किया। हमारें प्रिय सुनिल जी गोयल ओजस जी गोयल, आस्था जी गोयल, पलक जी अग्रवाल और महर्षि जी अग्रवाल भी सेवा के कार्य को देख रहे है एवं सहयोग कर रहे है।

क्रमशः

गुरु नानक देवजी

गुरु नानक महान समाज–सुधारक और धर्मगुरु थे। उनका जन्म 15 अप्रैल 1469 को लाहौर के पास स्थित तलवंडी राय भोई नामक स्थान में एक खत्री परिवार में हुआ। उनकी माता थीं त्रिप्ता और पिता थे मेहता कालू। वे दोनों एक समृद्ध किसान के यहां काम करते थे। नानक इन दोनों की तीसरी संतान थे। आज नानक का जन्मस्थल नानकाना साहब के नाम से भी जाना जाता है। बचपन से ही उनमें ईश्वर–भक्ति कूट–कूटकर भरी थी। वे जगह–जगह जाकर लोगों को सन्मार्ग दिखाते थे। उन्होंने बंगाल, तिब्बत, दक्षिण भारत, श्री लंका, म्यांमार (बर्मा), थाईलैंड, कांधार, तुर्की, बागदाद, मक्का–मदीना आदि की यात्रा की। उन्होंने लोगों को भगवत स्मरण की सीख दी। ईश्वर को वे वाहेगुरु के नाम से पुकारते थे।

नानक सिख धर्म के संस्थापक के रूप में अधिक प्रसिद्ध हैं, पर वे एक बहुमुखी प्रतिभावाले व्यक्ति थे। वे एक अच्छे कवि और दार्शनिक तो थे ही, पर सबसे बढ़कर वे एक उत्कृष्ट मानवप्रेमी थे। रबींद्रनाथ टैगोर उन्हें समस्त मानवजाति का गुरु मानते थे।

नानक ने कहा है कि मनुष्य का मूल्यांकन उसके बाहरी तड़क–भड़क के आधार पर नहीं करना चाहिए। सबसे महत्वपूर्ण कसौटी है उसमें ईश्वर भक्ति का होना। हर व्यक्ति को दयावान, संतुष्ट, धीर और सत्यवादी बनना चाहिए। ईश्वर उन व्यक्तियों से प्रेम करते हैं जो जरूरतमंदों को भोजन खिलाते हैं और पहनने के लिए कपड़े देते हैं। सभी मनुष्य उच्च कुल के सदस्य हैं, कोई नीच कुल का नहीं है। बेकार के कर्मकांड और रीति–रिवाज ईश्वर–प्राप्ति में बाधा बनकर आते हैं। ईश्वर अरूप और सर्वव्यापी हैं। उनका स्मरण करना और उनका गुण गाना उन्हें प्राप्त करने का सबसे सरल तरीका है।

गुरु नानक ने स्पष्ट कहा था कि मैं ईश्वर नहीं हूं, उनका अवतार भी नहीं हूं। मैं केवल एक मसीहा हूं जो उनका संदेश फैला रहा है। गुरु नानक ने सच्चे दिल से लोगों को धर्मोपदेश दिया। वे एक गर्वरहित महापुरूष थे और उन्होंने अपने शिष्यों को भी गर्व त्यागने की सीख दी। वे सदाचार, न्याय और ईश्वर की महिमा के पक्षपाती थे। उन्होंने सभी मनुष्यों की समानता की प्रतिष्ठा की।

अनेक गुणों से भरपूर अजवायन

मात्र 30 से.मी. से सवा मीटर तक के अजवायन के ऊंचे पौधों पर लगने वाला बीज हर परिवार की अनिवार्य आवश्यकता रहती है। इसीलिए इस पौधे को जन उपयोगी माना जाता है।

अजवायन को यवानी नाम भी दिया जाता है, जो महिलाओं के अनेक दुःख दूर करती है। इसके प्रयोग के लिए बीज, पत्ते, तेल तथा अर्क सभी प्राप्त किये जाते हैं। अजीर्ण की शिकायत होने पर अजवायन का तेल तथा अर्क शीघ्र लाभ देते हैं।

उदर शूल होने पर भी अजवायन का अर्क या तेल देवें। दांत दर्द करते हो तो अजवायन और बच को धीरे–धीरे [illegible] कम डालें। रस निगल जाएं। मुंह से दुर्गन्ध आती हो तो भी अजवायन [illegible] करें।

सर्दी का बुखार परेशान [illegible] के साथ खाया करें, पांच–छह दिनों में पूर्ण ठीक हो जायेगा।

जिन्हें सूतिका बुखार हो जाए, वह अजवायन का सेवन करे।

प्रसूता नारियों को अजवायन खिलाने पर उनकी भूख खुल जाती है। उनकी पाचन शक्ति में वृद्धि होने लगती है। वायु गोला की शिकायत होने पर अजवायन एक चम्मच, काला नमक चौथाई चम्मच, पी. छानकर ताजा पानी से लें।

फर्जी कॉल्स से बैंक के उपभोक्ता रहें सावधान

जब हम एटीएम से पैसे निकालते हैं तो हम उसकी स्क्रीन के आगे आकर पिन नम्बर लगाते हैं ताकि कोई पिन नम्बर देख न ले। पिछले कुछ समय से फोन पर ठगी के शिकार होने के कई मामले सामने आ रहे हैं। उपभोक्ता को मोबाईल से फोन आता हैं और खुद को एटीएम व बैंक का अधिकारी बताता हैं। वह उपभोक्ता को एटीएम अपग्रेडेशन के बारे में बताता हैं एटीएम नम्बर पुछता हैं। उपभोक्ता उस व्यक्ति की जानकारी लिए बिना ही एटीएम नम्बर व बैंक अकाउंट नम्बर दे देता हैं। उसके कुछ देर बाद मोबाईल पर मैसेज आता हैं और अकाउंट से पैसे निकाल लिए जाते हैं।

सावधानः– यदि आपके पास कोई फर्जी कॉल्स आती हैं और कोई पुरुष या महिला अपने आप को बैंक का अधिकारी बताते हैं और बैंक अकाउंट की जानकारी मांगते हैं तो आप उसे अपने बैंक अकाउंट की जानकारी न दें। और तुरंत अपने बैंक में जाकर सम्पर्क करें। और अपने बैंक अधिकारी को सारी जानकारी से अवगत करवाएं।

मुख्य कार्यकारी अधिकारी–कैलाश 'मानव'
मार्गदर्शक–प्रशान्त अग्रवाल,
जगदीश आर्य, देवेन्द्र चौबीसा
मार्गदर्शिका–कमलादेवी, वन्दना अग्रवाल
सहायक प्रबन्धक–सोहन लाल गाडरी
संपादक–लक्ष्मीलाल गाडरी
संपादन सहयोगी–घनश्याम सिंह राठौड़

मुद्रक–न्यूट्रेक ऑफसेट प्रिंटर्स, प्रकाशक–कमलादेवी, मुद्रण स्थल–13, भोपा मगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर–3 उदयपुर (राज.), प्रकाशन स्थल– ई–डी–71 बप्पा रावल नगर, हिरण मगरी, सेक्टर–6, उदयपुर (राज.)
सम्पादक–लक्ष्मीलाल गाडरी, आर.एन.आई. नं. RAJHIN/2014/59353 टेलिफोन नं. – 0294–6622222 मो.–09587720000,09928022275,09214657807,09785039524 www.mannkijeet.com, mankijeet2015@gmail.com